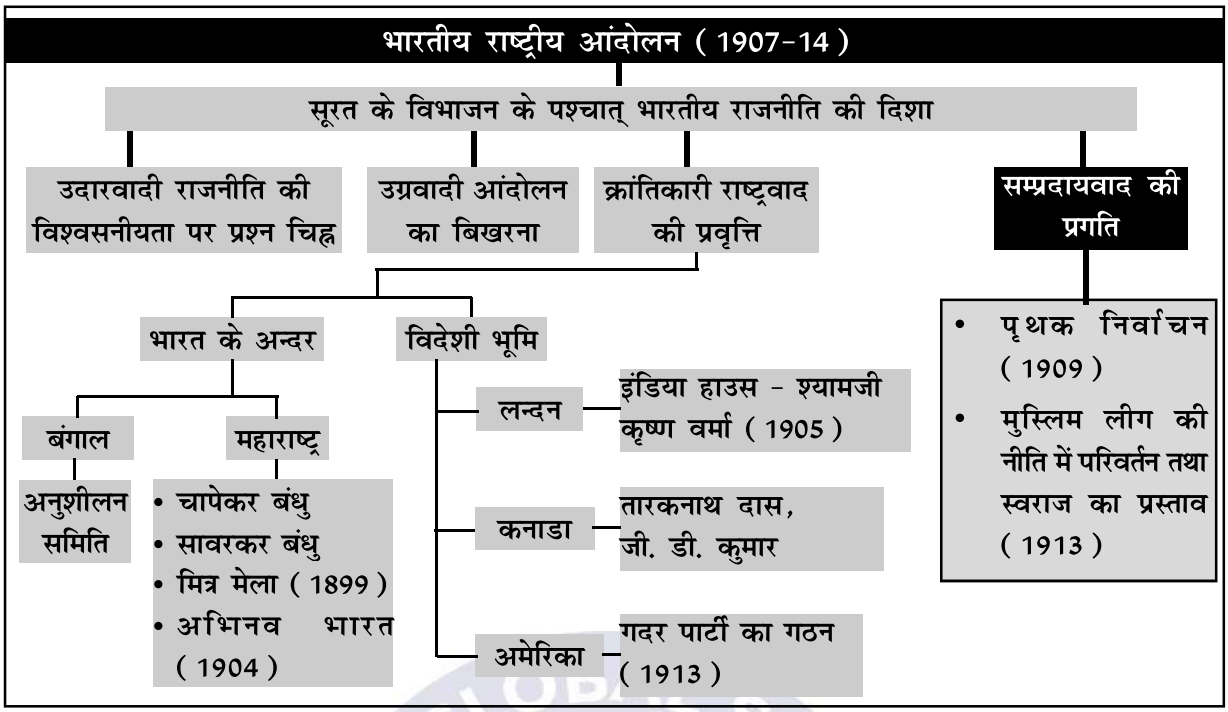

सूरत विभाजन के पश्चात् राष्ट्रीय आंदोलन की दशा एवं दिशा

उदारवादी राजनीति की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न

- सूरत विभाजन के पश्चात् कॉन्ग्रेस महज मुट्ठीभर उदारवादी नेताओं का क्लब बनकर रह गयी तथा एक बार फिर वह प्रतिवेदन की राजनीति की ओर लौट गयी। उदारवादी अपने कार्यक्रम एवं नीतियों को यथोचित गति प्रदान नहीं कर सके तथा युवा पीढ़ी ने उनके नेतृत्व को नकार दिया। साथ ही, उदारवादी अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का व्यापक प्रचार-प्रसार भी नहीं कर सके। इस कारण उदारवादी नेतृत्व ने अपनी विश्वसनीयता खो दी।

उग्रवादी आंदोलन का बिखरना

- सूरत विभाजन के पश्चात् उग्रवादी आंदोलन भी बिखर गया। तिलक छह वर्षों के लिए मांडले जेल भेज दिए गए। अरविन्द घोष ने राजनीति से संन्यास ले लिया तथा लाला लाजपत राय अमेरिका की ओर पलायन कर गये। अजीत सिंह को देश से निर्वासित कर दिया गया एवं निर्वासन के पश्चात् वे फ्रांस चले गए।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति

- क्रांतिकारी राष्ट्रवाद ने राष्ट्रीय आंदोलन में उत्पन्न राजनीतिक शून्य को भरने का प्रयास किया। अत: इस काल में क्रांतिकारी घटनाओं को प्रोत्साहन मिला। इन क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों पर दयानंद सरस्वती, बंकिम चंद्र चटर्जी और स्वामी विवेकानंद जैसे चिंतकों का भी प्रभाव था। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी गतिविधियों; जैसे- आयरिश विद्रोह ने भी क्रांतिकारियों को प्रभावित किया।
- इन क्रांतिकारियों ने विशेष रूप से वैयक्तिक वीरता पर बल दिया। जिसमें क्रूर एवं अलोकप्रिय ब्रिटिश अफसरों तथा देशद्रोहियों की हत्या करना, कोष (धनराशि) एकत्र करने के लिये डाका डालना, ब्रिटेन के शत्रु देशों से सैनिक सामग्री प्राप्त करने के प्रयास करना आदि शामिल था।
- देश से लेकर विदेश की भूमि तक क्रांतिकारी फैल गये। भारत में बंगाल एवं महाराष्ट्र इसके प्रमुख केन्द्र बने।
- बंगाल में प्रमुख क्रांतिकारी गुट मिदनापुर एवं कलकत्ता की अनुशीलन समिति था। इसकी स्थापना प्रमथनाथ मित्र, जितेंद्रनाथ मुखर्जी तथा बारींद्र कुमार घोष आदि के द्वारा 1902 ई. में की गई थी।
- महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन का उदय 1895 में तब हुआ, जब चापेकर बंधुओं ने प्लेग कमिश्नर रैण्ड तथा आयरस्ट की हत्या कर दी। आगे सावरकर बंधुओं ने 1899 ई. में 'मित्र मेला' नामक संगठन की स्थापना की। 1904 में विनायक दामोदर सावरकर ने लंदन में 'अभिनव भारत' की स्थापना की।
- इसके अलावा रास बिहारी बोस तथा सचिन्द्र नाथ सान्याल ने पंजाब, दिल्ली तथा संयुक्त प्रांत में क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया।
- विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन की आधारशिला रखने का श्रेय श्यामजी कृष्ण वर्मा को जाता है। कुछ अंग्रेज मित्रों की सहायता से उन्होंने 'इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' नामक अपना एक अखबार शुरू किया। उन्होंने लंदन में 1905 ई. में

'होमरूल सोसाइटी' तथा 'इंडिया हाउस' की भी स्थापना की। 1907 ई. में नासिक के एक क्रांतिकारी दल ने वी. डी. सावरकर के नेतृत्व में इंडिया हाउस पर कब्जा कर लिया। इसी दल के एक सदस्य मदनलाल ढींगरा ने 1909 ई. में कर्नल वाइली की हत्या कर दी।

- पेरिस तथा जिनेवा में क्रांतिकारी मैडम भीकाजी कामा सक्रिय थीं। 'वंदे मातरम्' पत्र द्वारा क्रांतिकारी विचारधारा का प्रकाशन प्रारंभ किया।
- क्रांतिकारियों ने अमेरिका के सैन-फ्रांसिस्को में 1913 में 'गदर आंदोलन' की शुरुआत की। इस आंदोलन के प्रणेता सोहन सिंह भाखना तथा लाला हरदयाल थे। 'गदर' (साप्ताहिक पत्र) इस पार्टी का मुखपत्र था। इस आंदोलन के मुख्य कार्यक्रम में सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करना तथा अंग्रेजों के हटने के पश्चात् भारत में स्वतंत्रता एवं समानता के आधार पर एक लोकतांत्रिक सरकार का गठन करना शामिल था।
- क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की महत्ता इस बात में है कि जब भी राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में शिथिलता आई, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद ने उसे एक नई ऊर्जा प्रदान की तथा लोगों में आत्मसम्मान एवं राष्ट्रवाद की भावना को जगाया। सबसे बढ़कर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज के लक्ष्य को अपनाया था, किंतु क्रांतिकारियों ने इस लक्ष्य को बहुत पहले ही अपना लिया था।
- **कामागाटामारू की घटना (1914)** भी क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से जुड़ी है। यह प्रकरण कनाडा में भारतीयों के प्रवेश से संबंधित था। कनाडा सरकार द्वारा ऐसे भारतीयों का अपने यहाँ प्रवेश वर्जित कर दिया गया था, जो सीधे भारत से नहीं आए थे। वस्तुतः भारतीय मूल के व्यापारी गुरुदत्त सिंह ने कामागाटामारू नामक एक जापानी जहाज से पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया के करीब 376 यात्रियों के साथ वैंकूवर की ओर प्रस्थान किया।
- किन्तु कनाडा सरकार के सख्त रवैये के कारण कामागाटामारू जहाज को वैंकूवर की जल सीमा को छोड़ना पड़ा। अंग्रेजों द्वारा जहाज को सीधे कलकत्ता लाने का आदेश दिया गया। जहाज के कलकत्ता पहुँचते ही कुछ यात्रियों और पुलिस के मध्य झड़पें हुईं, जिनमें करीब 18 यात्री मारे गए। शेष यात्रियों को जेल में डाल दिया गया।

संप्रदायवाद की प्रगति

- **भारत शासन अधिनियम, 1909 :-** ब्रिटिश सरकार द्वारा 1909 के अधिनियम को लागू करने का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम अल्पसंख्यकों को खुश करना, उदारवादियों का हाथ मजबूत करना तथा उग्रवादियों की शक्ति को तोड़ना था। भारत के वायसराय लॉर्ड मिंटो तथा भारत सचिव मॉर्ले के नाम पर इसे 'मॉर्ले-मिंटो एक्ट' भी कहा जाता है।
- 1909 के अधिनियम को सबसे अधिक याद किया जाता है इसके पृथक निर्वाचन पद्धति के दुष्परिणामों के लिए। इसने राजनीतिक-प्रशासनिक व्यवस्था में धर्म के औचित्य को सिद्ध कर दिया। इसने आगे सांप्रदायिक राजनीति के लिए मार्ग खोल दिया।
- वस्तुतः 1909 के अधिनियम में भौगोलिक प्रतिनिधित्व के स्थान पर विभिन्न हितों, वर्गों, धार्मिक समुदायों और जातियों के आधार पर प्रतिनिधित्व तय किया गया। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय प्रेसीडेंसी, महानगर निगमों, वाणिज्य मंडलों तथा बागान मालिकों, भूमिपतियों तथा व्यावसायिक वर्गों को पृथक प्रतिनिधित्व दिया गया।
- मुस्लिम चुनाव क्षेत्र के प्रावधान को ही पृथक् निर्वाचन व्यवस्था कहा गया है। इस एक्ट का यही पहलू सबसे विवादास्पद भी रहा है। इसके तहत मुस्लिमों को पहली बार पृथक् निर्वाचन दिया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्वि-राष्ट्रवाद का विचार पृथक निर्वाचन पद्धति की तार्किक परिणति था।

- **मुस्लिम लीग की नीतियों में परिवर्तन तथा स्वराज का प्रस्ताव (1913):-** 1912-13 ई. में मुस्लिम लीग की राजनीति में एक नई बात देखी गई। इस लीग में यंग पार्टी के कुछ सदस्य; यथा-मुहम्मद अली, शौकत अली, हकीम अजमल खाँ, हसन इमाम, जाफर अली खाँ और मौलाना अबुल कलाम आजाद का उदय हुआ। इन्होंने मुस्लिम लीग की नीतियों को कांग्रेस की नीतियों के निकट ला दिया। इन्हीं के प्रभाव में 1913 ई. में लखनऊ अधिवेशन में लीग ने भी स्वराज के लक्ष्य को अपना लिया। अब लखनऊ पैक्ट की भूमिका तैयार हो गई।

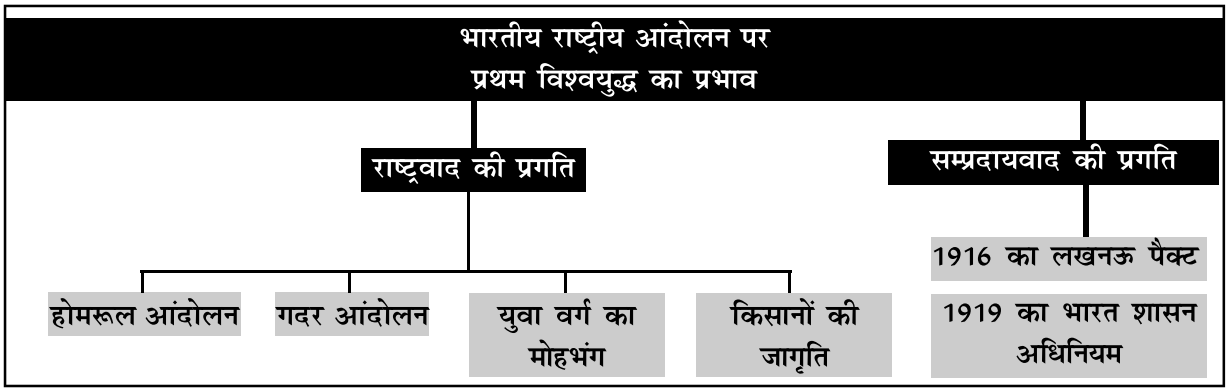

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव

- प्रथम विश्वयुद्ध (1914-19 ई.) में ब्रिटिश सरकार ने भारत को भी एक युद्धरत राष्ट्र घोषित कर दिया था। हालाँकि, इस युद्ध में भारत प्रत्यक्ष रूप से भागीदार नहीं था, फिर भी इसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर व्यापक प्रभाव डाला, जिसे भारतीय अर्थव्यवस्था, क्रांतिकारी गतिविधियों तथा राजनीतिक क्षेत्र में विशेष तौर पर देखा जा सकता है। एक तरह से इसने राष्ट्रीय आंदोलन में नई ऊर्जा एवं गति ला दी।

होमरूल आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध की स्थिति में जब एक तरफ गांधीजी एवं अन्य भारतीयों के द्वारा ब्रिटिश के साथ युद्ध प्रयास में सहयोग की नीति अपनाई जा रही थी, उस समय तिलक एवं श्रीमती एनी बेसेंट ने पृथक्-पृथक् होमरूल लीग का गठन कर होमरूल आंदोलन प्रारम्भ किया। 'होमरूल' शब्द आयरलैण्ड से लिया गया था और उसका बल स्वराज अथवा स्वशासन प्राप्त करने पर रहा था।
- सबसे पहले तिलक ने अप्रैल, 1916 में होमरूल लीग की स्थापना की। तिलक ने अपनी संस्था के द्वारा कर्नाटक, महाराष्ट्र (बम्बई छोड़कर), मध्य प्रांत तथा बरार में जागरूकता फैलाने का कार्यक्रम निर्धारित किया। भारत के शेष हिस्सों की जिम्मेवारी सितंबर, 1916 में स्थापित एनी बेसेंट की लीग को दी गयी।
- इस आन्दोलन के मुख्य कार्यक्रम राजनीतिक विषयक एवं जन जागरण संबंधी पुस्तिकाओं का प्रकाशन एवं विक्रय, राजनीतिक विषयों पर वाद-विवाद एवं भाषण आयोजित करवाना, समाज सेवा करना तथा जन सभाएँ आयोजित करवाना निर्धारित किये गए। तिलक ने 'मराठा' एवं 'केसरी' समाचार-पत्रों को होमरूल आंदोलन की अवधारणा स्पष्ट करने तथा प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया था। बेसेंट ने 'कॉमनवील' तथा 'न्यू इंडिया' जैसे पत्रों के माध्यम से अपने लीग के उद्देश्यों का प्रचार किया।
- तिलक ने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा तथा भाषाई राज्यों की मांग को स्वराज्य की माँग के साथ जोड़ दिया। तिलक ने यह घोषणा की कि, 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'।
- यद्यपि यह सत्य है कि होमरूल आन्दोलन अपने लक्ष्य को वास्तविक रूप से प्राप्त किये बगैर बिखर गया, तथापि इसने कुछ दीर्घकालिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ भी हासिल कीं। इसने नये क्षेत्रों में आन्दोलनकारी राजनीति का प्रसार कर आन्दोलन को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। इससे पहले आन्दोलन का फैलाव बंगाल, महाराष्ट्र अथवा पंजाब तक ही सीमित रहा था।
- इस आन्दोलन ने भावी राष्ट्रीय आन्दोलन को अनेक महत्वपूर्ण नेता भी प्रदान किए। उदाहरण के लिए, मद्रास में सत्यमूर्ति, बंगाल में सी. आर. दास, संयुक्त प्रांत में जवाहर लाल नेहरू आदि। सबसे बढ़कर होमरूल आन्दोलन की महत्ता इस बात में है कि यह गाँधीवादी चरण के आन्दोलन से पूर्व, पहला अखिल भारतीय स्तर का जन आन्दोलन था। इसने सदा के लिये आन्दोलन के रूख को उदारवादी चरण से जन आन्दोलन की तरफ मोड़ दिया।

गदर आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रांतिकारी संगठनों की गतिविधियों में तेजी देखी गई। इस काल में क्रांतिकारियों ने विदेशों से सहायता लेकर भारत में ब्रिटिश सत्ता का तख्ता पलटने का प्रयास किया। इसी क्रम में लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाखना एवं भाई परमानंद द्वारा 1913 ई. में सेन-फ्रांसिस्को में गठित गदर पार्टी ने प्रथम विश्वयुद्ध का फायदा उठाकर यूरोप से भारत तक बड़ा नेटवर्क स्थापित कर लिया और ब्रिटिश सरकार का तख्तापलट करने का प्रयास किया।
- हालाँकि उसकी योजना सफल नहीं रही परन्तु गदर आंदोलन ने भारतीयों में राष्ट्रवादी चेतना को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया। इस पार्टी द्वारा अंग्रेजी, हिन्दी एवं गुरूमुखी भाषा में 'गदर' नामक पत्र का प्रकाशन कर क्रांतिकारी विचारधारा को प्रोत्साहित किया गया।

युवा वर्ग का मोहभंग

- सामान्यत: युवा वर्ग पश्चिमी सभ्यता को सबसे अच्छा

समझता था तथा उससे प्रभावित रहता था। परन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के काल में उसने यूरोप में जो खून-खराबा देखा इससे उसका पश्चिमी सभ्यता से मोह-भंग हो गया। इस कारण भी आंदोलन की मन:स्थिति बनी।

किसानों की जागृति

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारत से बाहर भेजे गए सैनिक जब अपने गाँव की ओर गये तब उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की कमजोरियों को उजागर किया। इस कारण किसानों में राजनीतिक जागृति आयी।

संप्रदायवाद की प्रगति

- **1916 का लखनऊ पैक्ट:**- जैसा कि हम जानते हैं कि मुस्लिम लीग ने स्थापना के समय से ही ब्रिटिश राज पक्षधर नीति अपना ली थी, परन्तु 1910 ई. के पश्चात् इस पर मुस्लिम राष्ट्रवादी नेताओं का प्रभाव बढ़ने लगा। इसके परिणामस्वरूप 1913 ई. में मुस्लिम लीग ने 'स्वराज' के लक्ष्य को अपना लिया। इस प्रकार, लक्ष्य के स्तर पर मुस्लिम लीग कॉन्ग्रेस के निकट आ गयी। उसकी तार्किक परिणति थी 1916 का लखनऊ पैक्ट।
- इस पैक्ट में कॉन्ग्रेस और लीग ने मिलकर स्वराज की माँग को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया, बदले में कॉन्ग्रेस ने पृथक निर्वाचन को स्वीकार कर लिया। यह कॉन्ग्रेस के निर्णय की भूल मानी जाती है क्योंकि कॉन्ग्रेस ने अनजाने में राजनीति में धार्मिक पहचान को स्वीकृति देकर साम्प्रदायिक शक्ति को बढ़ावा दे दिया।
- **1919 का भारत शासन अधिनियम :**- स्वशासन के मुद्दे पर एक होमरूल आंदोलन चलाया जा चुका था। अत: 20 अगस्त, 1917 की अगस्त घोषणा में स्पष्ट रूप में यह कहा गया कि भारत में ब्रिटिश शासन का उद्देश्य स्वशासन का विस्तार करना है। किंतु कुल मिलाकर 1919 का मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार बिल अन्य बातों की बजाय साम्राज्यवादी हित में लाया गया था।
- सिद्धान्तत: इस सुधार बिल में पृथक निर्वाचन पद्धति की आलोचना की गई, किंतु व्यवहार में इसे न केवल बने रहने दिया गया बल्कि इसका विस्तार भी किया गया। अब सिख, एंग्लो-इंडियन तथा यूरोपियों को भी यह अधिकार मिल गया।
- मतदान का विस्तार किया गया, परंतु शहरी बुद्धिजीवियों की तुलना में ग्रामीण कुलीनों को अधिक मताधिकार दिया गया, ताकि वे विधानमण्डलों में ब्रिटिश सहयोगी तथा परिवर्तन विरोधी शक्ति के रूप में कार्य कर सकें।
- इसके माध्यम से भारतीय राजनीति का प्रांतीयकरण हुआ। फिर इसने संप्रदायवाद को भी प्रोत्साहन दिया। दरअसल, केन्द्रीय स्तर पर भारतीयों को सरकार में कोई भागीदारी नहीं दी गई, जबकि सीमित रूप में ही सही प्रांतीय स्तर पर भारतीयों को राजनीति में भागीदारी मिली। इस कारण भारतीय नेता प्रांतीय राजनीति की ओर मुड़ गए। इससे राजनीति का प्रांतीयकरण हो गया, वहीं हिन्दू नेता हिन्दू-बाहुल्य प्रांतों की ओर तथा मुस्लिम नेता मुस्लिम-बाहुल्य प्रांतों की ओर मुड़ गए। इस कारण राजनीति का साम्प्रदायीकरण हुआ।

अभ्यास प्रश्न: 'प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अंतर्राष्ट्रीय आयाम जोड़ दिये।' इस कथन का परीक्षण कीजिए।

(प्रश्न विश्लेषण: यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है। Key Words हैं- 'प्रथम विश्वयुद्ध', 'राष्ट्रीय आंदोलन', 'अंतर्राष्ट्रीय आयाम')

उत्तर: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव दो रूपों में व्यक्त होता है, प्रथम- राष्ट्रीय आंदोलन में तीव्रता आई, दूसरे- वह अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जुड़ गया। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

- स्वराज अथवा स्वशासन की मांग को लोकप्रिय बनाने के लिये तिलक एवं ऐनी बेसेंट के द्वारा पृथक् होमरूल लीग का गठन कर होमरूल आंदोलन चलाया गया। 'होमरूल' शब्द आयरलैंड से लिया गया था, अत: यह आयरिस स्वशासन के विचार से प्रभावित था।
- उसी प्रकार, भारत एवं भारत से बाहर युवाओं द्वारा क्रांतिकारी राष्ट्रवादी घटनाओं को अंजाम दिया गया। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका गदर आंदोलन ने निभाई। यह वह काल था, जब भारतीय क्रांतिकारी वैश्विक स्तर पर होने वाले साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के प्रभाव में आ गए थे।
- युद्ध के बाद गांधीजी द्वारा रौलेट सत्याग्रह आंदोलन का संचालन किया गया। रौलेट सत्याग्रह आंदोलन भी कहीं-न-कहीं वैश्विक स्तर पर होने वाले साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन से प्रेरित था।
- अंत में, प्रथम विश्वयुद्ध के मध्य ही ओटोमन खलीफा का मुद्दा उभरा, जो आगे खिलाफत आंदोलन का आधार बना।
- इसके अतिरिक्त विदेशी मोर्चे से लौटते हुए सैनिक किसानों के बीच में जागृति ला रहे थे, अत: इस काल में अनेक किसान सभाएँ गठित हो रही थीं।

इस प्रकार, प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अंतर्राष्ट्रीय आयाम जोड़ दिया।

■■■